



# सभी के सहयोग से ही निर्मल होगी हिंडन

हिंडन नदी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गंगा एवं यमुना नदियों के बीच बहने वाली एक महत्वपूर्ण नदी है, जो ऐसे बेसिन में प्रवाहित होती है, जो कृषि उत्पादकता की दृष्टि से अत्यन्त उपजाऊ है। हरनन्दी नाम से विख्यात रही इस महाभारतकालीन नदी के प्रति समाज की गहन श्रद्धा भी है, किन्तु पिछले कुछ दशकों से इसमें भारी मात्रा में ठोस अपशिष्ट, अशोधित मलजल और औद्योगिक बहिसाव डाले जाने से यह नदी बड़े पैमाने पर दूषित हुई है। प्रदूषण नियन्त्रण विभाग के विगत वर्ष लिये गये नमूनों के अनुसार यह प्रदेश की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक मानी गयी है। अत्यन्त प्रदूषित होने के कारण यह जीवनदायिनी नदी एक ओर तो अपने अस्तित्व को बचाने के लिये जूझ रही है, वहीं दूसरी ओर इसके समीप बसे ग्रामवासियों के लिये यह विभिन्न दुष्परिस्थियों का कारण बन गयी है। इस पर पेयजल व सिंचाई के लिये निर्भर रहे लाखों क्षेत्रवासियों एवं उनकी वर्तमान पीढ़ी के लिये यह पौराणिक नदी वर्तमान में एक नाले के रूप में ही जानी जा रही है।

हिंडन नदी के अस्तित्व को बचाने एवं उसको पूर्वावस्था में लाने के लिये शीघ्र ही सामूहिक प्रयास किये जाने आवश्यक हैं। इसी जिम्मेदारी का अहसास कराने तथा हिंडन नदी के महत्व एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाकर जनमानस की सोच (Culture) में बदलाव लाने के उद्देश्य से 'निर्मल हिंडन' कार्यक्रम का सुर्जन किया गया है, जिसके अन्तर्गत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सफलता एवं इसको मिल रहे जनसमर्थन से मैं काफी उत्साहित हूँ और सभी सहभागियों से यह अनुरोध करता हूँ कि कार्यक्रम की सफलता के लिये वृद्ध इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच के साथ अपना योगदान दें। हिंडन को पूर्वावस्था में लाने का दायित्व केवल सरकार का नहीं है, बल्कि यह उस पूरे क्षेत्र के प्रत्येक निवासी की जिम्मेदारी भी है। इसी सोच के साथ तथा निर्मल हिंडन कार्यक्रम के प्रति जनजन को जागरूक करने के उद्देश्य से 'हिंडन माटी' के रूप में यह त्रैमासिक मुख्यपत्र आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसे बेहतर एवं जनोन्मुखी बनाने के लिये आप सुझाव देंगे तो, मैं अनुग्रहीत होऊंगा।

डॉ प्रभात कुमार

अध्यक्ष, निर्मल हिंडन/आयुक्त, मेरठ मण्डल, मेरठ।

## तेया आंचल साफ करेंगे... जय-जय हटनांदी माई

उपरोक्त पंक्तियों जैसा भाव मन में बसाकर मेरठ मण्डल के मण्डलायुक्त डॉ प्रभात कुमार ने निर्मल हिंडन कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। पिछले छह माह में ही निर्मल हिंडन



### सम्पादकीय

कार्यक्रम ने हिंडन व उसकी सहायक नदियों के बहाव क्षेत्र के सभी सात जनपदों के अधिकारियों, स्वयं सेवी संगठनों व समाज के बीच एक सकारात्मक उर्जा का संचार कर दिया है। सभी मानने लगे हैं कि हाँ हिंडन व उसकी सहायक नदियों को प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए प्रशासन के साथ समाज का गठजोड़ अति-आवश्यक है। इस कार्यक्रम के दोरान समाज व प्रशासन की जु़गलबदी का एक खुशनुसा उदाहरण तब प्रस्तुत हुआ जब बागपत जनपद के बरनावा गांव के श्री अनिरुद्ध त्यागी ने अपनी दस बीघा जमीन हिंडन नदी को दान कर दी और उसमें डॉ प्रभात कुमार की सलाह पर वृक्षारोपण करा दिया। ऐसा ही दूसरा उदाहरण गौतमबुद्धनगर में निर्मल हिंडन वन महोत्सव आयोजन के दौरान समर्पित कार्यकर्ता टीकम सिंह के रूप में सामने आया। निर्मल हिंडन कार्यक्रम को गति देने वाले ऐसे अनेक पहलू बीते अल्प समय में प्रस्तुत हुए हैं। ये सभी उदाहरण ही निर्मल हिंडन कार्यक्रम के भविष्य की सफलता का आधार भी बनेंगे। निर्मल हिंडन कार्यक्रम सबका व सभी के लिए है। कोई भी आमजन किसी भी प्रकार से इसमें सहयोग कर सकता है। इस कार्यक्रम की सफलता या असफलता का आंकलन समाज करेगा। आज से दस वर्ष पश्चात् जब पीछे मुड़कर देखा जाएगा तो निर्मल हिंडन कार्यक्रम की बीत चुकी लम्बी यात्रा का सुखद परिणाम सबके सम्मुख पहले ही प्रस्तुत हो चुका होगा। लेकिन इस कार्यक्रम में अपना तन, मन, धन लगाने वाले तपस्वी उस समय स्वयं अपना आंकलन करने के लिए स्वतंत्र होंगे जोकि आज इसकी नीव मजबूत करने में लगे हैं। इस कार्यक्रम से जुड़ने वाले हिंडन दून, निर्मल हिंडन समितियों के प्रतिनिधि, स्वयं सेवी संगठन या सामाजिक कार्यकर्ता सभी सफलता में अपने अंश का दावा कर सकेंगे। विभिन्न विभागों के सरकारी अधिकारी जोकि इस अभियान का किसी न किसी मोड़ पर हिस्सा रहे होंगे वे सभी आश्वस्त होकर कह सकेंगे कि हमने अपना समय सही कार्य में लगाया था।

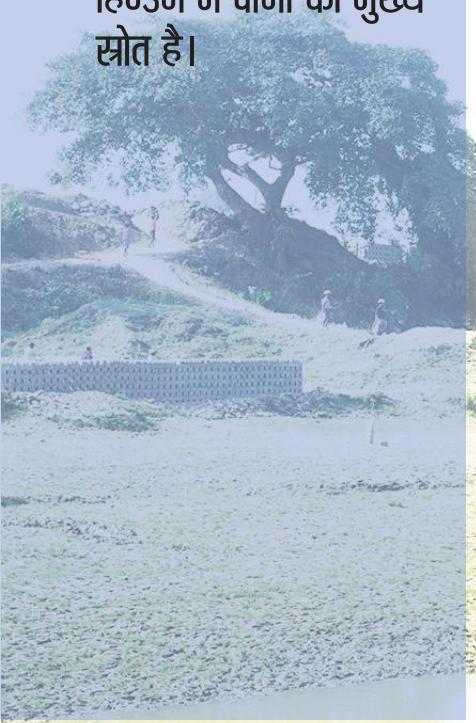
इस कार्यक्रम के बीजारोपण के पश्चात् अभी इसमें अंकुर फूटने लगे हैं और मुलायम व सुन्दर कौपलें बन रही हैं। इस समय इसका पालन-पोषण सही ढंग से हो इसकी चिंता निर्मल हिंडन कार्यक्रम से जुड़ने वाले प्रत्येक सदस्य को करनी होगी। इस कार्यक्रम को युवा होने तक सही देखभाल की आवश्यकता है। हिंडन जैसी नदियों के सुधार हेतु कोई सफल कार्यक्रम देश में अभी तक संचालित नहीं हुआ है। यह कार्य कठिन जरूर है लेकिन नामुकिन नहीं। मुझे उमीद ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि यह कार्यक्रम सफल होगा और देश-दुनिया में एक नजीर बनेगा। इस कार्यक्रम को इसी प्रकार की अवस्था वाली देश की अन्य नदियों पर भी अमल में लाया जा सकेगा। अंत में निर्मल हिंडन कार्यक्रम की सफलता की कामना करते हुए पिछले छह माह की गतिविधियों का लेखा-जोखा समेटे हुए इसका प्रथम मुख्यपत्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। आशा है कि आप इस्तेवानों से अवश्य अवगत कराएंगे, जिससे कि मुख्यपत्र के आगामी अंकों में सुधार लाया जा सके।

-रमनकांत त्यागी





**शिवालिक पहाड़ियों से ही हिण्डन के साथ-साथ हिण्डन की पश्चिमी दिशा से नागदेव नदी निकलती है। नागदेव नदी करीब 45 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात सहारनपुर में ही घोघेकी गांव के जंगल में आकर हिण्डन नदी में मिल जाती है। बरसात के दौरान इस नदी में अधिक मात्रा में पानी बहता है। यह नदी हिण्डन में पानी का मुख्य स्रोत है।**



मोहननगर बैराज पर भी हिण्डन में गाजियाबाद के घरेलू बहीसाव व उधोगों के नाले लगातार मिलते रहते हैं। बैराज से आगे बढ़ते हुए हिण्डन नदी गौतमबुद्धनगर जनपद में प्रवेश करती है तो वहां गाजियाबाद से भी विकराल समस्या हिण्डन को झेलनी पड़ती है। यहां पर उधोगों का तरल कचरा, घरेलू बहिसाव व अतिक्रमण जैसी गंभीर समस्याएं हिण्डन की हत्या की साजिश में अंतिम किरदार निभाती हैं। जैसे-तैसे हिण्डन यमुना नदी के निकट तक पहुंचती है। यमुना में मिलने से दो किलोमीटर पहले अपर गंगा नहर से करीब 400 क्यूसेक पानी हिण्डन की पूर्वी दिशा की ओर से हिण्डन नदी में डाल दिया जाता है, लेकिन हिण्डन नदी पर जहरीली गंदगी का बोझ इतना अधिक होता है कि वह उसमें बहुत अधिक असर नहीं डाल पाता है।

## नदी में पानी के स्रोत

हिण्डन नदी में पानी का मुख्य स्रोत वर्षाजल तथा नहर का पानी ही है। नदी उद्भव से बरसात के दौरान ही अधिक मात्रा में पानी हिण्डन में आता है। उस दौरान करीब 100 मीटर चौड़े नदी तल में तीन से चार फीट पानी बहता है। कुछ पानी शिवालिक आरक्षित वन क्षेत्र में मौजूद घने जंगल में मौजूद पेड़ों की जड़ों से रिसते हुए नदी की तली पर आ जाता है। अपर गंगा नहर से हिण्डन की कुल दूरी तक चार स्थानों पर करीब 3000 क्यूसेक पानी हिण्डन नदी में सीधे व सहायक नदियों के माध्यम से डाला जाता है। हिण्डन की सहायक धारा बरसनी झरने से वर्षभर पानी गिरता रहता है। बरसनी झरना करीब 100 फीट ऊँचा है।

वर्ष 1978 में हिण्डन नदी में बाढ़ के दौरान अधिकतम पानी का बहाव करीब 1,30,000 क्यूसेक मापा गया था। इससे अधिक पानी का बहाव हिण्डन नदी में आज तक नहीं देखा गया है।

## बरसाती नदी

हिण्डन एक बरसाती नदी है। इसमें बरसात के दौरान (जुलाई से सितम्बर) पानी की मात्रा बढ़ जाती है जबकि अन्य दिनों (अकूबर से जून) में पानी न होने के कारण अनेक स्थानों पर हिण्डन नदी सूख जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें शहरों, कस्बों का गैर-शोधित घरेलू बहिसाव, उधोगों से निकलने वाला प्रदूषित पानी ही बहता है।

## हिण्डन की सहायक नदियां

हिण्डन नदी की प्रमुख सहायक नदियां काली (पश्चिम), कृष्णी, पुर का टांडा की धारा, धमोला, पांवधोई, शीला, नागदेव व चाचाराव हैं जबकि सहायक धाराएं बरसनी, सपोलिया, छज्जेवाली, पीरवाली, कोठरी, अंधाकुन्डी व स्रोती हैं। ये सभी एक साथ मिलकर ही हिण्डन को नदी बनाती हैं। ये सभी एक निश्चित दूरी व स्थान पर हिण्डन नदी में आकर मिलती रहती हैं। जहां पर कोठरी धारा नदी के मुख्य भाग में मिलती है उसे कोठरी मिलान अथवा दुजाला (दो जलों का मिलन) के नाम से जानते हैं। शिवालिक पहाड़ियों से ही हिण्डन के साथ-साथ हिण्डन की पश्चिमी दिशा से नागदेव नदी निकलती है। नागदेव नदी करीब 45 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात सहारनपुर में ही घोघेकी गांव के जंगल में आकर हिण्डन नदी में मिल जाती है। बरसात के दौरान इस नदी में अधिक मात्रा में पानी बहता है। यह हिण्डन नदी में पानी का मुख्य स्रोत है।

हिण्डन की बड़ी सहायक नदियों में काली (पश्चिम) जोकि हिण्डन नदी की पूर्वी दिशा से सहारनपुर जनपद के ही गंगाली गांव से प्रारम्भ होकर मुजफ्फरनगर से होते हुए करीब 145 किलोमीटर का सफर तय करके मेरठ जनपद के गांव पिठोलाकर के जंगल में जाकर हिण्डन नदी में समाहित होती है। काली (पश्चिम) में चुड़ियाला से प्रारम्भ होने वाली शीला नदी में मुजफ्फरनगर शहर से करीब 25 मिलोमीटर की दूरी पर अपर गंगा नहर खतौली से एक नाले के माध्यम से करीब 1000 क्यूसेक पानी अम्बरपुर गांव के जंगल में डाला जाता रहा है। वर्तमान में यह पानी तकनीकी समस्या के चलते नहीं डाला जा रहा है। इससे

पहले सहारनपुर जनपद में निर्मल हिंडन कार्यक्रम के तहत अपर गंगा नहर के भनेड़ा स्केप से करीब 100 क्यूसेक पानी काली (पश्चिम) नदी में डालना प्रारम्भ किया गया है। यह नदी देश की सावधिक प्रदूषित नदियों में से एक है क्योंकि इसमें मुजफ्फरनगर जनपद के छोटे-बड़े करीब 80 उधोगों का गैर-शोधित तरल कचरा तथा मुजफ्फरनगर शहर का गैर-शोधित घरेलू बहिसाव सीधे बहता है। हिंडन व काली (पश्चिम) के मिलने के स्थान पर काली (पश्चिम) में करीब 80 प्रतिशत और हिंडन में मात्र 20 प्रतिशत पानी ही होता है।

हिंडन नदी की पूर्वी दिशा से सहारनपुर जनपद के ही दरारी गांव से निकलने वाली कृष्णी नदी शामली व बागपत जनपदों से होते हुए करीब 153 किलोमीटर का सफर तय करके बागपत जनपद के ही बरनावा कस्बे के जंगल में जाकर हिंडन नदी में विलीन हो जाती है। यह नदी भी भयंकर प्रदूषण का दंश झेलती है। कृष्णी नदी में नौता, सिवका, थानाभवन, चरथावल, शामली व बागपत के उधोगों का गैर-शोधित तरल कचरा तथा गैर-शोधित घरेलू बहिसाव मिलता है जिसको कि अंत में हिंडन में उड़ेल दिया जाता है। कृष्णी नदी में पूर्वी यमुना नहर से शामली के निकट खेड़ी करमू गांव से एक नाले में 50 क्यूसेक पानी निर्मल हिंडन कार्यक्रम के तहत डालना प्रारंभ किया गया है। यह नाला सल्फा गांव के निकट कृष्णी नदी में मिलता है। सहारनपुर जनपद में ही हिंडन की पश्चिमी दिशा में स्थित संसारपुर गांव से प्रारम्भ होकर करीब 25 किलोमीटर का सफर तय करके धमोला नदी सहारनपुर जनपद के ही ऐतिहासिक शरकथाल गांव के जंगल में जाकर हिंडन में मिलती है। शरकथाल गांव सढ़ौली हरिया गांव का ही एक मजरा है। धमोला की सहायक नदी पांवधोई जो कि सहारनपुर जनपद के ही शंकलापुरी गांव के निकट से बहती है, यहां प्राचीन महादेव मन्दिर भी स्थित है। यहां से ऊपरी भाग में महरबानी गांव के निकट से आने वाले दो बरसाती नाले खुर्द व गुना कट भी पांवधोई में आकर मिल जाते हैं। पांवधोई नदी शंकलापुरी से करीब 7 किलोमीटर की दूरी तय करके सहारनपुर शहर के अंदर जाकर धमोला नदी में मिल जाती है। पांवधोई के उद्भम में साफ पानी है क्योंकि यह नदी वौये (जमीन से अपने आप निकलने वाला पानी) के पानी से बहती है, लेकिन इस साफ पानी में धमोला तक आते-आते सहारनपुर शहर का गैर-शोधित घरेलू बहिसाव मिल चुका होता है। धमोला नदी सहारनपुर शहर के तमाम घरेलू बहिसाव तथा पांवधोई द्वारा उसमें डाली गई गंदगी को ढोकर लाती है और उस सब कचरे को हिंडन नदी में डेल देती है।

## हिंडन व उसकी सहायक नदियों का विवरण

क्रम	नदी का नाम	उदगम स्थल	विलीन स्थल	लम्बाई
1	हिंडन नदी	शिवालिक की पहाड़ियां, (कालूवाला पास) सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	गांव- तिलवाड़ा/मोमनाथल गांव, जनपद-गौतमबुद्धनगर (उत्तर प्रदेश)	355
2	कृष्णी नदी	दरारी गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	गांव- बरनावा, जनपद-बागपत (उत्तर प्रदेश)	153
3	काली नदी (पश्चिम)	गंगाली गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	गांव- अठाली/पिठलोकर गांव जनपद-मेरठ (उत्तर प्रदेश)	145
4	शीला नदी	करखा-भगवानपुर, जनपद-हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	गांव-मतौली, जनपद-सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)	61
5	धमोला नदी	संसारपुर गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	शरकथाल/सढ़ौली हरिया गांव, जनपद-सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)	52
6	पांवधोई नदी	गांव-शंकलापुरी, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	सहारनपुर शहर, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	07
7	नागदेव नदी	कोठारी गांव, शिवालिक की पहाड़ियां, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)	घोंघेकी गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	45
8	चाचा रौ	कालूवाला गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	कमालपुर गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	18
9	पुर का टांडा	गांव पुर का टांडा, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	कमालपुर गांव, सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश)	08

## प्रदूषण एवं उद्योग

हिंडन नदी के प्रदूषित होने के तीन मुख्य कारण उद्योगों व शहरों/कस्बों का गैर-शोधित तरल कचरा तथा कृषि बहिसाव है। हिंडन में प्रदूषण का बड़े स्तर पर प्रारम्भ सीधे तौर पर सहारनपुर जनपद के ही परागपुर गांव के जंगल में स्टार पेपर मिल के गैर-शोधित तरल कचरा लेकर आने वाले नाले के मिलने से हो जाता है। यहां से हिंडन में गंदगी का प्रवेश होना प्रारम्भ होता है। इससे पहले नागदेव नदी के माध्यम से कुछ छोटे उधोग अपना गैर-शोधित तरल कचरा सहारनपुर जनपद में ही नौगजा पीर के पास डालते हैं, लेकिन वह तरल कचरा हिंडन तक बहुत कम मात्रा में आ पाता है। यहां से आगे हिंडन नदी के यमुना में विलीन होने तक ऐसे दर्जनों नाले मिलते हैं जिस कारण से अत्यंत काला व बदबूदार पानी ही इसमें बहता है। हिंडन नदी में सहारनपुर के परागपुर गांव से लेकर गौतमबुद्धनगर जनपद के तिलवाड़ा गांव तक शहरों व कस्बों का जो गैर-शोधित तरल कचरा गिरता है उसके कारण यह नदी अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है। नदी में कोई भी जलीय जीव जीवित नहीं है।



जिन नदियों के किनारे सभ्यताएं बसती थीं वहाँ भयंकर जल प्रदूषण की त्रासदी के कारण बस्तियाँ उज़ड़ने की कगार पर हैं। नदी में प्रदूषण का प्रतिशत इतना है कि नदी के पानी को छूना तो दूर उसके पास खड़ा होना भी दूभर हो चला है। बुजुर्गों के अनुसार जिस नदी के पानी की तली में पड़ा हुआ सिवका दिखता था उस पानी को हाथ में लेने पर अब हाथ की रेखाएं भी नहीं दिखती हैं।



हिण्डन नदी के बहाव क्षेत्र के सभी सात जनपदों में हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के किनारे विभिन्न प्रकार के कुल 316 उधोग स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड राज्य के हरिद्वार जनपद से जो शीला नदी काली नदी (पश्चिम) के माध्यम से हिण्डन में आकर मिलती है, उसके किनारे कुल 7 उधोग (5 पल्प एण्ड पेपर व 2 गन्ना मिल) स्थित हैं। इस प्रकार कुल 323 उधोग हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के किनारे स्थित हैं, जिनका तरल गैर-शोधित व शोधित कचरा हिण्डन में सीधे व सहायक नदियों/नालों के माध्यम से आकर मिलता है।

उत्तर प्रदेश जल निगम के अनुसार सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बुढाना, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा व ग्रेटर नोएडा में लगभग 1215.43 एम०एल०डी० घरेलू बहिस्राव उत्पादित हो रहा है जिसमें 450 एम०एल०डी० घरेलू बहिस्राव के शोधन की व्यवस्था विभिन्न नगरों में है जबकि शेष 765.43 एम०एल०डी० झामता के घरेलू बहिस्राव का शोधन नहीं हो पा रहा है।

## प्रदूषण का प्रभाव

हिण्डन व उसकी सहायक नदियों में बहते अत्यधिक प्रदृष्टि पानी के कारण नदी किनारे बसे गांव-कस्बों का भूजल भी जहरीला हो चुका है। सैकड़ों गांवों में जल-जनित गंभीर बीमारियाँ पनप रही हैं। सैकड़ों लोग जल-जनित जानलेवा बीमारियों के कारण असमय काल के मुंह में समा चुके हैं। कुछ किसान हिण्डन व उसकी सहायक नदियों में बहने वाले जहरीले पानी से ही जाने-अनजाने अपनी फसलों की सिंचाई भी करते हैं, जिस कारण से जहाँ उनके खेतों की कृषि मिट्टी में परसिस्टेंट ऑर्गेनिक पाल्यूटेंट्स जैसे तत्व पाए गए हैं वहीं उस मिट्टी में पैदा हुई सब्जियाँ व अन्य फसलों में भी कीटनाशकों के तत्व मिले हैं। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के आदेश के पश्चात् हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के किनारे बसे गांवों से सैकड़ों की संख्या में हैंडपम्प उखड़े जा चुके हैं तथा उन गांवों को खच्छ पेयजल उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। जिन नदियों के किनारे सभ्यताएं बसती थीं वहाँ भयंकर जल प्रदूषण की त्रासदी के कारण बस्तियाँ उज़ड़ने की कगार पर हैं। नदी में प्रदूषण का प्रतिशत इतना अधिक है कि नदी के पानी को छूना तो दूर उसके पास खड़ा होना भी दूभर हो चला है। बुजुर्गों के अनुसार जिस नदी के पानी की तली में पड़ा हुआ सिवका दिखता था उस पानी को हाथ में लेने पर अब हाथ की रेखाएं भी नहीं दिखती हैं।

## अंत में

हिण्डन नदी मोमनाथल गांव की पूर्वी तथा तिलवाड़ा गांव की पश्चिमी दिशा के जंगल में सहारनपुर के शिवालिक से चलने वाली जीवित हिण्डन नदी रास्ते की प्रदूषण भरी कठिनाई को झेलते हुए गुमसुम रहकर यमुना नदी में समाहित हो जाती है। एक जीवित नदी का दुखदः अंत देखकर यमुना भी नम आंखों से हिण्डन का स्वागत करती है और दोनों नदियाँ प्रक्ष फोकर इलाहाबाद में गंगा नदी में मिलने के लिए आगे बढ़ जाती हैं।



# निर्मल हिण्डन कार्यक्रम

निर्मल हिण्डन कार्यक्रम नदी सुधार के क्षेत्र में सकारात्मक सोच पर आधारित सरकार और समाज की साझा पहल है। यह अभियान न होकर एक सोच है। इसके अन्तर्गत प्रयास रहेगा कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति हिण्डन व उसकी सहायक नदियों को अपनी सोच का एक हिस्सा बना सके। इसमें हिण्डन व उसकी सहायक नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने तथा निकट बसे समाज को अपनी नदी के साथ जोड़ने का प्रयास होगा। इस कार्यक्रम के तहत वह प्रत्येक कार्य किया जाएगा जिससे कि हिण्डन व उसकी सहायक नदियों तथा निकट बसे समाज को लाभ हो सके। हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के बहाव क्षेत्र के सभी सात जनपदों (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, बागपत, मेरठ, गजियाबाद व गौतमबुद्धनगर) के सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवी संगठनों, किसानों, छात्रों व समाज के जागरूक नागरिकों को निर्मल हिण्डन के कांवरा में शामिल कर सुधार कार्यों को अमल में लाया जाएगा। निर्मल हिण्डन अभियान का आगाज हिण्डन व उसकी सहायक नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए मेरठ के मण्डलायुक्त डॉ प्रभात कुमार के नेतृत्व में किया गया है। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हिण्डन व उसकी सहायक नदियों को सरकार व समाज के समुहिक प्रयास से निर्मल व अविरल बनाना है।

## निर्मल हिण्डन कार्यक्रम की गतिविधियां



इस कार्यक्रम में तुरंत व दूरगामी दो प्रकार की योजनाओं पर अमल किया जाना है। तुरंत प्रभाव में आने वाले कार्यों में सर्वप्रथम हिण्डन निर्मल कोष का गठन किया जा चुका है। यह कोष हिण्डन सुधार के कार्यों में आर्थिक पक्ष को मजबूती देने के लिए उद्देश्य के लिए बनाया गया है। इस कोष का गठन मेरठ विकास प्राधिकरण के अन्तर्गत किया गया है। कोई भी आमजन व हिण्डन प्रेमी इस कोष में अपना आंशिक योगदान दे सकता है। शनिवार का दिन हिण्डन दिवस घोषित किया गया है, सप्ताह के प्रत्येक शनिवार

हिण्डन नदी से संबंधित कार्यों में ही पूर्णतः उर्जा लगाई जाएगी। हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के बहाव क्षेत्र के दोनों किनारों से दो किलोमीटर तक की दूरी के गांवों की सूची तैयार की गई है। इन गांवों के नक्शे बनाना तथा इन सभी गांवों के तालाबों के चिन्हांकन का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त निर्मल हिण्डन के प्रचार माध्यमों में उसका लोगो, वेबसाइट, फेसबुक पेज, वहाटसएप गृप व लॉग आदि तैयार किए गए हैं। इस अभियान की एक पुस्तक तथा डाक्यूमेंट्री फिल्म तैयार करने का कार्य भी प्रारम्भ किया गया है। निर्मल हिण्डन के लिए किए जाने वाले दूरगामी कार्यों के लिए मेरठ की मुख्य विकास अधिकारी सुश्री आर्यका अखोरी की अध्यक्षता में 10 सदस्यों की एक एक्शन प्लान समिति का गठन किया गया है। संबंधित विभाग के पदाधिकारी व विषय विशेषज्ञ इस समिति के सदस्य हैं। इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर निर्मल हिण्डन सुधार के कार्यों को अमल में लाया जाएगा।

## हिण्डन समिति बैठक

निर्मल हिण्डन कार्यक्रम को गति देने के उद्देश्य से डॉ प्रभात कुमार द्वारा समय-समय पर सभी सात जनपदों के जिला प्रशासन सहित समाज के विभिन्न तबकों (उधोगों, स्वयं सेवी संगठनों, व्यापारियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं) के साथ बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में हिण्डन व उसकी सहायक नदियों को सदानीरा बनाने हेतु गहन मंथन किया जाता है। बैठक के दौरान पिछली प्रगति का आंकलन तथा आगामी योजना पर सभी के साथ विचार करके लक्ष्य तय किया जाता है।

डॉ प्रभात कुमार के नेतृत्व में निर्मल हिण्डन समिति की समय-समय पर बैठकें आयोजित की जा जाती हैं जिनमें कि पिछले कार्य की समीक्षा तथा आगामी योजनाओं का लक्ष्य तय किया जाता है। इन बैठकों में सहारनपुर के मण्डलायुक्त श्री दीपक अग्रवाल सहित सभी सात जनपदों के जिलाधिकारी, सिचाई विभाग, वन विभाग, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण विभाग, नगर निगम व अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी तथा सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

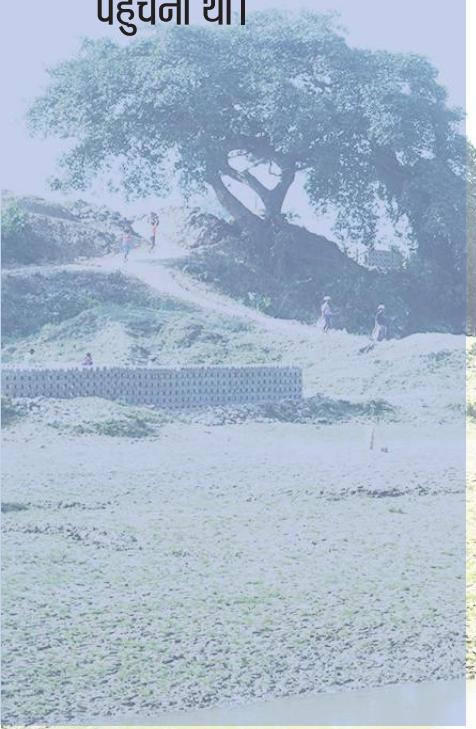
निर्मल हिण्डन कोष  
इलाहाबाद बैंक  
खाता सं-  
50399065176

IFSC CODE-  
ALLA0212075



# निर्मल हिंडन उद्धम यात्रा

**निर्मल हिंडन उद्धम यात्रा**  
**5 अगस्त, 2017 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित हिंडन समिति के अध्यक्ष व मेरठ के मण्डलायुक्त डॉ प्रभात कुमार के नेतृत्व में समिति के उपाध्यक्ष व सहारनपुर के मण्डलायुक्त श्री दीपक अग्रवाल, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय की सलाहकार श्रीमति अनीता सिंह, जिलाधिकारी सहारनपुर, हिंडन समिति के सदस्य सचिव श्री एच एन सिंह, जिला वानिकी अधिकारी व स्वयं सेवी संगठनों के एक दल के साथ प्रारम्भ हुई। इस यात्रा का उद्देश्य हिंडन नदी के वास्तविक उद्धम स्थल तक पहुंचना था।**



यमुना नदी की प्रमुख सहायक नदी हिंडन का उद्धम सहारनपुर जनपद का पुर का टांडा गांव के जंगल को माना जाता रहा है, लेकिन नई खोज से हिंडन नदी के उद्धम को लेकर चल रही जद्दोजहाद आखिर उस समय समाप्त हो गई जब डॉ प्रभात कुमार के नेतृत्व में एक दल ब्रिटिश गजेटियर व सेटेलाइट मैपिंग को आधार मानते हुए शिवालिक वन क्षेत्र में बरसनी नदी तक पहुंचा। यहां पानी घने जंगल और कुछ झरनों से बहता है, जिससे कि हिंडन नदी बनती है।

निर्मल हिंडन उद्धम यात्रा 5 अगस्त, 2017 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित हिंडन समिति के अध्यक्ष व मेरठ के मण्डलायुक्त डॉ प्रभात कुमार के नेतृत्व में समिति के उपाध्यक्ष व सहारनपुर के मण्डलायुक्त श्री दीपक अग्रवाल, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय की सलाहकार श्रीमति अनीता सिंह, जिलाधिकारी सहारनपुर, हिंडन समिति के सदस्य सचिव श्री एच एन सिंह, जिला वानिकी अधिकारी व स्वयं सेवी संगठनों के एक दल के साथ प्रारम्भ हुई। इस यात्रा का उद्देश्य हिंडन नदी के वास्तविक उद्धम स्थल तक पहुंचना था।

यात्रा के दौरान सर्वप्रथम टीम पुर का टांडा गांव के उस स्थान पर पहुंची जहां पर छोटे चैक डैम बनाए गए हैं। यहां निरीक्षण के दौरान देखा गया कि इस स्थान पर बरसात में जो पानी एकत्र होता है वही हिंडन की मुख्य धारा तक पहुंचता है। यहां पर दो बड़े तालाब बने हुए हैं जिनमें कि बरसात में कुछ पानी आस-पास के जंगल से आकर एकत्र हो जाता है, जबकि बाकि समय यहां पानी की एक बूंद भी नहीं बचती है। हिंडन नदी को पानी देने का यह एक सीमित स्रोत है। इस स्थान पर सर्वे ऑफ इंडिया का नक्शा देखने के बाद हिंडन नदी की मुख्य धारा कालूवाला खोल अर्थात हिंडन नदी की धारा, बरसनी व अंधा-कुन्डी पर जाने का निर्णय लिया गया। यहां से पूरी टीम कालूवाला टोंगिया गांव के निकट वन चोकी पहुंची। यहां से आगे कालूवाला खोल अर्थात हिंडन नदी के बिछौने में करीब 8 किलोमीटर पैदल चलकर अंधा-कुन्डी व बरसनी नदी तक पहुंचा गया। यहां हिंडन नदी की चैडाई लगभग 100 मीटर है। इस खोल अर्थात नदी में कई छोटी-छोटी धाराएं मिलती रहती हैं। हिंडन नदी के बिछौने के चारों ओर अलग-अलग प्रजातियों के वृक्ष मौजूद हैं। रास्ते में दोनों ओर पहाड़ियां, तितलियां, गिरगिट व रुके पानी में मछलियां जगह-जगह दिखती हैं।

कालूवाला खोल अर्थात गुलेरिया अर्थात हिंडन नदी की दोनों धाराओं बरसनी व अंधा-कुन्डी को देखने के बाद डॉ प्रभात कुमार व श्री दीपक अग्रवाल सहित पूरी टीम ने माना कि यही वास्तविक हिंडन धारा है, दर्योंकि यह पानी ही हिंडन नदी में बहता है। जबकि पुर का टांडा से निकलने वाली धारा बहुत छोटी और संकरी है जिसमें कि पानी भी नहीं है।



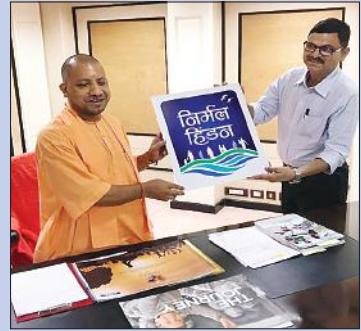
# निर्मल हिण्डन वन महोत्सव



निर्मल हिण्डन कार्यक्रम के तहत 19–26 अगस्त तक हिण्डन वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान हिण्डन व उसकी सभी सहायक नदियों कृष्णी, काली (पश्चिम), धमोला, पांवधोई व नागदेह के किनारे वृक्षारोपण किया गया। हिण्डन व उसकी सहायक नदियों के गुजरने वाले सभी सात जनपदों सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद व गौतमबुद्धनगर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित किए गए। वृक्षारोपण में जिला प्रशासन, स्वयं सेवी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, धार्मिक संगठनों सहित किसानों व स्कूली छात्रों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

**गाजियाबाद-** हिण्डन वन महोत्सव का प्रारम्भ 19 अगस्त से गाजियाबाद जनपद में हिण्डन नदी के निकट प्रताप विहार पार्क में करीब 5 हेक्टेयर भूमि पर डॉ प्रभात कुमार द्वारा वृक्षारोपण करके किया गया। यहाँ करीब तीन हजार पौधे विभिन्न प्रजातियों के रोपित किए गए। इसका आयोजन नगर-निगम गाजियाबाद द्वारा स्वयं सेवी संगठनों के साथ मिलकर किया गया। इस अवसर पर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष सुश्री कंचन वर्मा, एसडीएम सदर, एडीएम सिटी, जिला वन अधिकारी सहित आरण्या, नमामी हरनन्दे, पर्यावरण सचेतक समिति, सादित फाउंडेशन व खुशी फाउंडेशन के प्रतिनिधियों सहित सामाजिक कार्यकर्ता श्री विजयपाल बघेल, श्री विक्रांत शर्मा, श्री प्रशांत वत्स, श्री संदीप त्यागी व श्री गौरव भारद्वाज सहित विभिन्न स्कूलों के करीब 1000 बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों ने पर्यावरण संबंधी नाटिका प्रस्तुत की तथा सभी ने एक-एक पौधा भी रोपित किया। इसके पश्चात लोनी में हिण्डन नदी किनारे भनेडा गांव के जंगल में वन विभाग द्वारा विभिन्न प्रजातियों के 500 पौधे रोपित किए गए। गाजियाबाद जनपद में हिण्डन वन महोत्सव के दौरान कुल तीस हजार पौधे रोपित किए गए।

**गौतमबुद्धनगर-** गौतमबुद्धनगर जनपद के वृक्षारोपण का प्रारम्भ ग्रेटर नोएडा के हिण्डन किनारे बसे कुलेसरा गांव में वन विभाग व स्वयं सेवी संगठनों के सहयोग से मण्डलायुक्त मेरठ व जिलाधिकारी गौतमबुद्धनगर के हाथों से पौधारोपण करके किया गया। यहाँ पीपल, नीम, पिलखन व गुटेल आदि के करीब दो हजार पौधे रोपित किए गए। इस अवसर पर एडीएम श्री विनीत कुमार व डीएफओ श्री पिरिशि शुक्ला, श्री विक्रांत तोंगड़, श्री रामवीर तंवर सहित किसान व स्कूली छात्र भी शामिल हुए। इस अवसर पर कुलेसरा व आस-पास के क्षेत्र से नदी में प्लास्टिक न जाने देने के लिए जन जागरूकता हेतु युवा कार्यकर्ता टीक्रम सिंह को जिमेदारी सौंपी गई। गौतमबुद्धनगर में भी हिण्डन नदी के किनारे विभिन्न स्थानों (तिलवाड़ा व मोमनाथन आदि) पर कुल तीस हजार पौधे रोपित किए गए।



## निर्मल हिण्डन लोगो -परिचय

निर्मल हिण्डन कार्यक्रम को प्रदर्शित करने के लिए उसका एक लोगो बनाया गया है। इस लोगो में नदी के साथ संबंध रखने वाले प्रकृति के सभी आयामों को दर्शाया गया है। इस लोगो का विमोचन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ द्वारा लखनऊ में किया गया।

**नीला आवरण -** पीछे दर्शाया गया नीला आवरण आकाश को तो प्रदर्शित करता ही है साथ ही साफ-स्वच्छ वातावरण की ओर भी इंगित करता है।

**पक्षी -** उड़ते हुए दोनों पक्षी हिण्डन नदी की जैव-विविधता के प्रतीक हैं। पक्षी जैव-विविधता के प्रमुख घटक होते हैं। दोनों पक्षी उड़ते हुए सकेत कर रहे हैं कि किसी भी नदी के स्वस्थ स्वास्थ्य की निशानी वहाँ की सबल जैव-विविधता भी है।

**पीली बिन्दी -** हिण्डन शब्द में 'ह' के ऊपर लगाई गई पीले रंग की बिन्दी ब्रह्माण्ड में उर्जा के स्रोत 'सूर्य' को इंगित करती है। किसी भी नदी के पानी को शुद्ध बनाए रखने के लिए उसका सूर्य की किरणों से स्पर्श आवश्यक होता है।

**व्यक्तियों का समूह -** व्यक्तियों (महिलाएं, पुरुष, बच्चे व बूढ़े) का समूह नदी के साथ समाज के जीवंत दृश्य को परिभाषित करता है। जब नदी अविरल व निर्मल बहती है तो वहाँ बसा हुआ समाज भी फलता-फूलता है।

**नीली धाराएं -** नीली धाराएं नदी में कल-कल बहते निर्मल जल की परिचायक हैं। जल को रंगहीन माना जाता है लेकिन जब साफ-स्वच्छ जल को परिभाषित करना हो तो उसे हल्के नीले रंग का प्रदर्शित किया जाता है।

**हरी मोटी रेखा -** मोटी हरी रेखा शुद्ध लहलहाती फसलों व हरियाली को इंगित करती है। जब नदी के निकट हरा-भरा वातावरण रहेगा तो नदी का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा।